Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी
अध्याय 4
'बिहारी सतसई'
से कुछ पद - बिहारी
(भाग-01)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1.बिहारी सतसई में किस रस की प्रधानता है -

(अ) शान्त
(ब) श्रृंगार
(स) वीर
(द) हास्य

उत्तर:(ब)

प्रश्न 2.बिहारी की काव्य-शैली है -

(अ) मुक्तक काव्य शैली
(ब) खण्ड काव्य शैली
(स) गीतिकाव्य शैली
(द) प्रबन्धकाव्य शैली

उत्तर:(अ)

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1."कब कौ टेरतु दीन-रट …… जगनाइक जग बाय॥
प्रस्तुत दोहे में कवि ने उलाहना देते हुए किस पर कटाक्ष किया है?

उत्तर:कवि ने उलाहना देते हुए जगत के गुरु और नायक श्रीकृष्ण पर कटाक्ष किया है।

प्रश्न 2.किस लालच में गोपियाँ श्रीकृष्ण की मुरली छिपा लेती हैं?

उत्तर:श्रीकृष्ण से बात करने के आनन्द के लालच में गोपियाँ उनकी मुरली को छिपा लेती हैं।

प्रश्न 3.श्रीकृष्ण के आगमन पर वन के मोर क्या प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं?

उत्तर:श्रीकृष्ण के आगमन पर मोर उनके श्याम स्वरूप को बादल समझकर हर्ष से नाचने लगते हैं।

प्रश्न 4.समान आभा के कारण नजर न आने वाले नायिका के आभूषणों की पहचान किस प्रकार होती है?

उत्तर:आभूषणों की पहचान हाथ से शरीर को छूने पर आभूषणों की कठोरता से उनकी पहचान हो पाती है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.जगत के चतुर चितेरों को भी मूढ़ बनना पड़ा। कवि ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर:क्योंकि नायिका का सौंदर्य प्रतिफल बदलता रहता है और प्रतिपल बदलते रहने के कारण उसके अनुपम सौंदर्य का चित्रण कोई चतुर चित्रकार भी नहीं कर पाता है, क्योंकि पल-पल परिवर्तित होने वाली वस्तुओं का चित्रण करना अत्यंत दुष्कर कार्य है। इसलिए कवि ने चतुर चितेरे तेरे को भी मूढ़ कहा है।

प्रश्न 2."कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत लजियात।
भरे भौन में करत है, नैननु ही सों बात ॥"
प्रस्तुत दोहे के माध्यम से (अनुसार) नायक नायिका आँखों की चेष्टाओं के माध्यम से किन भावों को प्रकट कर रहे हैं?

उत्तर:नायक-नायिका आँखों की चेष्टाओं द्वारा कुछ कहने की, असहमत होने की, प्रसन्नता की, खीझने की, मिलन सुख की, हर्षित होने की और लजाने की मनोभावनाओं को व्यक्त कर रहे हैं। यह मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि मनुष्य के हृदय की भावनाएँ उनके नेत्रों से झलक जाती हैं।

प्रश्न 3."अंग-अंग नग जगमगत दीपसिखा सी देह।। दिया बढ़ाएँ हूँ, बड़ौ उज्यारौ गेह॥
प्रस्तुत दोहे में सखी नायक से नायिका की छवि की प्रशंसा करते हुए क्या कहना चाहती है?

उत्तर:सखी इस दोहे में नायक के सामने नायिका के उज्ज्वल रूप की, उसके गौरवर्ण की प्रशंसा करते हुए कहती है कि नायिका का शरीरआभूषणों से जड़ा हुआ है।नायिका के शारीरकी आभा दीपशिखा के समान दमक रही है।सखी कहती है कि यदि उसके घर में दीपक ना हो तो भी उसकेशरीर का प्रकाश जी दीपक की तरह चारों ओर फैला रहता है।नायिका के स्वर्णिम सौंदर्य और आभूषणों की चमक से दीपक के बिना भी घर में अत्यधिक प्रकाश हो रहा है ।यहां सखी नायक को नायिका के प्रति आकर्षित करना चाहती है।

संकलित दोहों की सप्रसंग व्याख्याएँ

(1) मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झांई परे, श्याम हरित दुति होई॥

कठिन शब्दार्थ- भव बाधा = सांसारिक बाधाएँ या कष्ट। ***हरौ*** = दूर कर दो। **नागरि** = चतुर। **सोइ** = वही। **जातन**= जिनके शरीर। **झाँई** = झलक (छाया)। **परे** = पड़ने से। **श्याम** = श्रीकृष्ण, पाप। **हरित दुति** = हरी कांति वाले, प्रसन्नहोजाते हैं।

संदर्भ तथा प्रसंग-प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलितपाठ **बिहारी सतसई**

से कुछ पद से लिया गया है। इसके रचयिता महाकवि बिहारी हैं। कवि ने आलंकारिक शैली में राधाजी की स्तुति की है।

व्याख्या- महाकवि बिहारी राधा जी से प्रार्थना करते हैं कि हे चतुर राधिका जी आप मेरे सांसारिक कष्टों को दूर कर दीजिए। जिनके शरीर की छाया मात्र गिरने से श्री कृष्ण का शरीर हरित आभा का हो जाता है अर्थात प्रसन्न हो जाता है। ऐसी चतुर राधिका जी आप मेरे सांसारिक कष्टों को दूर कीजिए।

श्लिष्टार्थ- (1) कविवर बिहारी राधिका जी से विनम्रता पूर्वक निवेदन करते हैं कि चतुर राधिका जी आप मेरी सांसारिक बाधाओं को दूर कीजिए ताकि मैं अपने लक्ष्य को पूरा कर सकूं। हे राधिका जी आपके शरीर की छाया मात्र से ही श्रीकृष्ण प्रसन्न हो जाते हैं तो ऐसी राधिका जी आप मुझ पर अवश्य ही कृपा कर मेरी बाधाओं को दूर करेंगे जिससे मैं अपने परम लक्ष्य को प्राप्त कर सकूं।

(2) कवि राधिका जी से अपने सांसारिक कष्टों को दूर करने की प्रार्थना करता है और कहता है कि जिनके ध्यान मात्र से ही समस्त प्रकार के दु:ख, कष्ट और संताप सुख और पुण्य में बदल जाते हैं। ऐसी हे राधिका जी आप मेरे जीवन को भी सफल कीजिए (यहां 'श्याम' शब्द 'दु:ख, संताप' और 'दु:ख, पाप' का प्रतीक है। जबकि 'हरित' शब्द सुख और पुण्य का प्रतीक है।)

(3) जिस प्रकार पीले रंग में श्याम रंग का अनुसरण करने से वह हरा रंग बन जाता है। उसी प्रकार से राधा के शरीर की कांति से श्याम वर्ण वाले श्री कृष्ण हरे भरे हो जाते हैं अर्थात प्रसन्न हो जाते हैं। इसलिए कवि राधा जी से प्रार्थना करता है कि आपके शरीर की छाया मात्र से जब भगवान कृष्ण प्रसन्न हो जाते हैं तो आप मेरी बाधाओं को भी दूर कीजिए।

विशेष-

(i) कवि ने राधा की स्तुति सतसई के मंगलाचरण में की है

(ii) साहित्यिक ब्रजभाषा का प्रयोग है।

(iii) शैली आलंकारिक और चमत्कार युक्त है।

(iv) 'श्याम' तथा 'हरित दुति' में श्लेष अलंकार है।

(2) तो पर वारी उरबसी, सुनि राधिके सुजान।
तू मोहन के उरबसी, वै उरबसी समान।

कठिन शब्दार्थ-तो पर - तुझ पर। **बारौं** = न्यौछावर करता हूँ। **उरबसी** = उर्वशी, एक अति सुन्दर मानी गई अप्सरा। **सुजान** = चतुर। **मोहन** = श्रीकृष्ण, मोहित करने वाले। **उरबसी** = हृदय में बसी हुई है। **हवै** = होकर।

उरबसी = उर्वशी अप्सरा के समान अथवा मन को वश में करने वाली बनकर॥

संदर्भ तथा प्रसंग-प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलितपाठ **बिहारी सतसई से कुछ पद** से लिया गया है।इसके रचयिता महाकवि बिहारी हैं। इस दोहे में कवि ने यमक अलंकार का चमत्कार प्रदर्शित करते हुए राधाजी के सौन्दर्य और श्रीकृष्ण पर उनके प्रभाव का वर्णन किया है।

व्याख्या-प्रस्तुत दोहे में कविवर बिहारी राधा के सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहते हैं कि राधा की सखी कहती है कि हे राधिका तुम परम सुंदरी हो। मैं तुम्हारे ऊपर स्वर्ग की अप्सरा उर्वशी को भी न्यौछावर करती हूं। हे राधिका तुम कृष्ण के हृदय में बसी हुई हो। जिस प्रकार उनके वक्ष पर पड़ी सुंदर माला शोभायमान हो रही है, वैसे ही तुम उनके हृदय में बसी शोभायमान हो रही हो।

विशेष-

(i) राधा के अनुपम सौंदर्य का वर्णन हुआ है।
(ii) ***उरबसी*** शब्द द्वारा ***यमक अलंकार*** का चमत्कार कवि ने दिखाया है।
(iii) प्रथम '**उरबसी**' शब्द का अर्थ '**उर्वशी अप्सरा**' है। दूसरे '**उरबसी**' शब्द का अर्थ है- हृदय में बसी हुई तथा तीसरे '**उरबसी**' शब्द का अर्थ आभूषण/माला। इस प्रकार इस शब्द में **यमक अलंकार** है।
(iv) कवि काभाषा पर असाधारण अधिकार है।
(v) ब्रजभाषा का लालित्य द्रष्टव्य है।

(3) बंधु भए का दीन के, को तार्यौ रघुराई॥
तूठे-तूठे फिरत हौ, झूठे बिरद कहाई॥

कठिन शब्दार्थ-बंधु = भाई, सहायक। **दीन** = दुखी, असहाय। को = कौन। **तार्यौ** = उद्धार किया है। **रघुराइ** = भगवान राम। **तूठे-तूठे** = बड़े संतुष्ट या प्रसन्न। **फिरत हौ** = घूमते हो। **बिरद** = यश, प्रशंसा। **कहाइ** = कहलवाकर।

संदर्भ तथा प्रसंग-प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलितपाठ **बिहारी सतसई से कुछ पद** से लिया गया है।इसके रचयिता महाकवि बिहारी हैं। इस दोहे में कवि स्वयं को महा दीन और सबसे बड़ा पापी मानकर भगवान को उलाहना और चुनौती दे रहा है कि वह उसे तार कर दिखाएँ।

व्याख्या-कवि कहती है- हे रघुपति ! आप दीन बन्धु कहलाते हो, पतितोद्धारक कहे जाते हो। आप अपनी प्रशंसा सुन-सुन कर बड़े इतराते फिर रहे हो। सच तो यह है कि आपको अभी तक मुझ जैसे दीन और पापी से पाला नहीं पड़ा है। छोटे-छोटे दीनों और पतितों का उद्धार करके, झूठी प्रशंसा से संतुष्ट हो रहे हो। यदि मेरा उद्धार कर दो तो मैं मान लूंगा कि आप वास्तव में दीनबन्धु और पत्ति पावन हैं।

विशेष-

(i) कवि ने अपनी कथन की चतुराई से भगवान को अपना उद्धार करने की चुनौती दे डाली है। कवि चाहता है कि। भगवान उसकी चुनौती से उत्तेजित होकर उसको उद्धार कर दें और सहज ही उसका काम बन जाय।

(ii) भाषा-शैली कवि की प्रौढ़ काव्यकला का परिचय कराती है।

(iii) तूठे-तूठे' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

(4) कब को टेरतु दीन रट,
होत ने स्याम सहाय।
तुमहूँ लागी जगत गुरु,
जग नायक जग बाइ॥

कठिन शब्दार्थ- कब कौ = कितने अधिक समय से। **टेरतु** = पुकार रहा हूँ। **दीन-रट** = दीनता भरी वाणी में। **सहाय** = सहायक, कृपालु। **तुमहू** = आपको भी। **जगत्-गुरु** = सारे जगत के पूज्य। **जग-नायक** = जगत के मार्गदर्शक, स्वामी। **जग-बाइ** = संसार की हवा, सांसारिक प्रभाव।

संदर्भ तथा प्रसंग-प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलितपाठ **बिहारी सतसई से कुछ पद** से लिया गया है।इसके रचयिता महाकवि बिहारी हैं। कवि अपने प्रभु की उपेक्षा से आहत है। भगवान उसकी दीनता भरी पुकार को नहीं सुन रहे हैं।

व्याख्या- कवि कहता है-हे प्रभु! मैं कब से दीनता भरी पुकार से आपको अपनी सहायता के लिए पुकार रहा हूँ पर आप मेरी दीन-पुकार को अनसुनी किए जा रहे हैं। हे श्याम ! हे जगत पूज्य! हे जगन्नायक! कहीं ऐसा तो नहीं कि आप को भी सांसारिक हवा लग गयी हो। आपने भी सांसारिक प्राणियोंकितरहादीनों की उपेक्षा करना आरम्भ कर दिया हो। यदि ऐसा न होता तो मेरी करुण पुकार सुनकर आप मेरी सहायता करने अवश्य आते।

विशेष-

(i) कवि ने अपने इष्ट श्रीकृष्ण को द्रवित करने के लिए चतुराई भरे तर्कों का सहारा लिया है।

(ii) भाषा लक्षणाशक्ति और वचन वक्रता से प्रभावशाली बनाई गई है।

(iii) कथन शैली उपालम्भ तथा व्यंग्यपूर्ण है।

(iv) कवि ने सखा भाव की भक्ति द्वारा अपने इष्ट को रिझाया है।

(5) या अनुरागी चित्त की,
गति समुझै नहिं कोई।
ज्यों-ज्यों बूडै स्याम रंग,
त्यों-त्यों उज्जलु होइ॥

कठिन शब्दार्थ-या = इस। **अनुरागी** = प्रेमी। **चित्त** = मन। **गति** = स्वभाव, व्यवहार। **समुझै** = समझ पाना। **कोइ** = कोई भी। **ज्यों-ज्यों** = जैसे-जैसे। **बूड़े** = डूबता है। **स्याम रंग** = काला रंग, श्रीकृष्ण से प्रेम। **त्यों-त्यों** =

उतना ही। **उज्जलु** = उजला, स्वच्छ। **होय** = होता जाता है।

संदर्भ तथा प्रसंग-प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलितपाठ **बिहारी सतसई से कुछ पद** से लिया गया है।इसके रचयिता महाकवि बिहारी हैं। कवि इस दोहे में प्रेमी मन के विचित्र व्यवहार को प्रस्तुत कर रहा है।

व्याख्या-कविवर बिहारी कहते हैं कि इस अनुराग से भरे हुए मन की गति को कोई नहीं समझ सकता है। मन की गति सबसे अधिक होती है। वह एक ही पल में हजारों मील दूर जा सकता है। प्रेम भाव से परिपूर्ण मन जैसे-जैसे श्याम रंग में डूबता है वैसे वैसे ही वह उज्ज्वल होता जाता है।

श्लिष्टार्थ- कवि कहता है कि प्रेम पूर्ण इस हृदय का कोई भी पार नहीं पा सकता है। इसकी गति को कोई भी नहीं समझ सकता है। प्रेम से भरा हुआ यह हृदय जैसे-जैसे श्याम अर्थात भगवान कृष्ण के प्रेम और भक्ति में डूबता है, वैसे वैसे ही सांसारिक बाधाओं से पार होता जाता है।

विशेष-

(i) कवि ने विरोधाभास तथा श्लेष अलंकारों का उपयोग करते हुए अपने उक्ति-चमत्कार का परिचय कराया है।

(ii) मन की गति सर्वाधिक होती है इस लोक प्रचलित उक्ति का समर्थन कविने किया है।

(iii) विरोधी कथन का भाव यह है कि मन को जितना श्रीकृष्ण की प्रीति में लगाया जाता है वह उतना ही निर्मल, अवगुणों से मुक्त होता चला जाता है।

(iv) दोहे में **"ज्यों ज्यों ……. उज्जलु होय॥** में विरोधाभास अलंकार तथा '**अनुरागी**' और '**स्याम रँग**' में श्लेष अलंकार है।

(6) भजन कह्यौ तातें भज्यौ,
भज्यौ ने एक बार।
दूरि भजन जातें कयौ,
सो नैं भज्यौ गँवार॥

कठिन शब्दार्थ-भजन= स्मरण करना, भजना। **तासौं** = उससे। **भज्यो** = दूर भागा। **भज्यौ न** = भजन नहीं किया। **एक बार** = एक बार भी। **दूरि भजन** = दूर भागना। **सो** = वह, उसे। **तें** = तूने। **भज्यौ** = स्मरण किया, अपनाया। **गँवार** = मूर्ख, नासमझ॥

संदर्भ तथा प्रसंग-प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित पाठ **बिहारी सतसई से कुछ पद** से लिया गया है।इसके रचयिता महाकवि बिहारी हैं। कवि ने भगवान के भजन के महत्त्वको प्रतिपादित किया है।

व्याख्या-बिहारी अपने मन अथवा भगवान के नाम को भजने से विमुख गँवार लोगों को

सम्बोधित करते हुए कहते हैं- अरे ! नादान मनुष्य जब तुमसे जिसका भजन करने, स्मरण करने या अपनाने को कहा तबतुउस प्रभु स्मरण से तो तू दूर भागता रहा। तूने जीवन में एक बार भी उस प्रभु की भजन नहीं किया और जिन सांसारिक विषयों से दूर भागने को कहा, तृने उन्हीं का सेवन किया, उन्हीं में डूबा रहा। फिरतेरा उद्धार कैसे हो सकता है।

विशेष-

(i) प्रभु-स्मरण से ही मनुष्य का कल्याण हो सकता है, इसे सहज संदेश के रूप में कवि ने व्यक्त किया है।

(ii) कवि के अनुसार सांसारिक सुख-भोगों में आनन्द खोजने वाले और ईश्वर के भजन से विमुख लोगों को गँवार माना है।

(iii) **'भजन'** तथा **'भज्यौ'** शब्दों में **यमक अलंकार** है। भजन = भागो मत तथा स्मरण करना, दो अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। इसी प्रकार 'भज्यौ' भी भागा और भजन करना या अपनाया जाना अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। अत: यमक अलंकार है।

(7) अजौं तरुयौना ही रह्यौ,
श्रुति सेवत इक रंग।
नाकवास बेसरि लयौ,
बसि मुकुतन के संग॥

कठिन शब्दार्थ- अजौं = अब भी, अब तक। **तरयौना** = कानों का एक पुराना आभूषण, (अन्य अर्थ) तरा नहीं है। **श्रुति** = कान, वेद। **सेवत** = सेवा करना, शोभा बढ़ाना, अध्ययन करना। **इक रंग** = एक रंग में, निरंतर। **नाक बास** = नाक पर निवास , स्वर्ग प्राप्ति। **बेसरि** = नांक का आभूषण, सामान्य, अविश्वनीय। **लयौ** = प्राप्त कर लिया। **बसि** = रहकर। **मुकुतन** = मोतियों, मुक्त पुरुषों, निष्पक्ष लोग।

संदर्भ तथा प्रसंग- प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित पाठ **बिहारी सतसई से कुछ पद** से लिया गया है। इसके रचयिता महाकवि बिहारी हैं। इस दोहे में कविनेउन्मुक्त भाव से की गई तपस्या कामहत्त्व बताया है तथा कोरे वैदिक ज्ञान को निरर्थक कहा है।

व्याख्या- कवि भगवान के कानों में पहने जाने वाले आभूषण तरयौना को संबोधित करके कहता है कि, हे तरयौना तू अभी तक भगवान के कानों की ही सेवा करता रहा है, इसलिए तू कोई उच्च स्थान नहीं प्राप्त कर पाया है। लेकिन मोतियों से बनी बेसर भगवान के नाक जैसा ऊंचा स्थान प्राप्त कर लिया है।

श्लिष्टार्थ- कवि वेदपाठियों को संबोधित कर कहता है कि हे मनुष्य तुमने केवल श्रुति साहित्य अर्थात केवल वेदों का ही अध्ययन

किया है इसलिए तुम्हारा उद्धार नहीं हुआ है। लेकिन मुक्त तपस्वियों के साथ रहकर तपस्या करने वाले प्राणी तो नाक अर्थात स्वर्ग जैसा ऊंचा स्थान प्राप्त कर चुके हैं।

विशेष-

(i) कवि ने उन्मुक्त भाव से की गई तपस्या का महत्त्व बताया है।

(ii) दोहे की इस छोटी-सी गागर में कवि ने अर्थ-गाम्भीर्य का सागर भर दिया है, अतःबिहारी गागर में सागर भरने वाले कवि कहे जाते हैं।

(iii) बृज भाषा को अनुपम लालित्य दृष्टिगोचर होता है।

(iv) **'तरयौना', 'श्रुति', 'सेवत', 'इकरंग', 'नाक', 'बेसरि' तथा 'मुकुतन'** में श्लेष अलंकार का प्रयोग हुआ है।

(8) सधन कुंज छाया
सुखद सीतल सुरभि समीर।
मनु वै जातु अजौं वहै,
उहि जमुना के तीर।

कठिन शब्दार्थ- सघन = घनी। **सुखद** = सुखदायिनी। **सीतल** = ठंडी। **सुरभि** = सुगंध। **समीर** = वायु। **वैजातु** = हो जाता है। **वहै** = वही, कृष्ण के समय जैसा प्रसन्न। **उहि** = उस। **तीर** = तट।

संदर्भ तथा प्रसंग- प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित पाठ **बिहारी सतसई से कुछ पद** से लिया गया है। इसके रचयिता महाकवि बिहारी हैं। बिहारी कृष्ण भक्त कवि हैं। कवि ने इस दोहे में श्रीकृष्ण की विहार भूमि-यमुना तट, लता कुंज की सघन छाया, शीतल मंद समीर के सुखदायी वातावरण का वर्णन किया है।

व्याख्या- नायिका अपनी सखी से कहती है कि हे सखी उन घने कुंजों की सुख देने वाली सघन छाया और वहां बहने वाली शीतल मंद हवा आज ही मेरे मन को यमुना की ओर ले जाती है। जहां कभी मैंने अपने प्रियतम श्री कृष्ण के साथ है विहार किया था। वहाँ श्रीकृष्ण नाना प्रकार की क्रीड़ाएँ और रासलीलाएँ किया करते थे।

विशेष-

(i) सहज, सजीव और स्वाभाविक प्रकृति चित्रण है।

(ii) भाषा सरस सहजऔरप्रवाहमयीहै।शैली मनोहरता जगाने वाली है।

(iii) "सुखद, सीतल, सुरभि, समीर" में अनुप्रास की छटा है।

(9) सोहत ओढ़ैं पीत पटु,
स्याम सलौनें गात।
मनौ नीलमनि सैल पर,
आतप पर्यौ प्रभात॥

कठिन शब्दार्थ- **सोहत** = शोभा पाते हैं। **ओढ़े** = ओढ़कर, धारण करके। **पीत पटु**= पीताम्बर, पीला वस्त्र। **स्याम** = श्रीकृष्ण। **सलौने** = लावण्यमय, आकर्षक। **गात** = शरीर। **मनौ** = मानो। **नीलमनि** = नीलम नामक रत्न। **सैल** = शिला, पर्वत। **आतप** = धूप। **परयौ** = पड़ रही हो। **प्रभात** = प्रातः काल॥

संदर्भ तथा प्रसंग-प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलितपाठ **बिहारी सतसई से कुछ पद** से लिया गया है।इसके रचयिता महाकवि बिहारी हैं। इस दोहे में कवि पीताम्बर धारी कृष्ण के श्याम शरीर में प्रात:कालीन धूप की संभावना व्यक्त कर रहा है।

व्याख्या- भगवान कृष्ण अपने श्यामल शरीर पर पीले रंग के वस्त्र धारण किए हुए हैं। श्यामल शरीर पर पीले रंग के वस्त्र धारण किए हुए भगवान कृष्ण अति सुंदर प्रतीत हो रहे हैं। जैसे नीली मणियों के पर्वत पर अर्थात नीलम के पर्वत पर प्रातःकाल की पीली धूप गिरने से जो हरित प्रकाश शोभायमान होता है वैसे ही भगवान कृष्ण के शरीर से निकलने वाली हरित आभा शोभायमान हो रही है।

विशेष-

(i) कवि ने श्रीकृष्ण के पीताम्बर से सुशोभित श्याम वर्ण शरीर की शोभा का वर्णन सटीक उत्प्रेक्षा के द्वारा किया है।

(ii) अपनी कल्पना शक्ति और सटीक उपमानों का चयन करके कवि ने काव्य-प्रेमी पाठकों के मन में मनमोहन की चित्ताकर्षक छवि साकार कर दी है।

(iii) भाषा के प्रयोग में कवि की कुशलता और शब्द-चित्र साकार करने वाली वर्णन शैली का, सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत हुआ है।

(iv) दोहे में **उत्प्रेक्षा** ('मनों ..... पर्यो प्रभात) तथा **'पीत-पट', 'स्याम सलौने'** तथा **'आतप पयौ प्रभात** में **अनुप्रास** अलंकार है।

(10) इहीं आसे अटक्यौ रहतु,
अलि गुलाब के मूल।
वै है फेरि बसंत ऋतु,
इन डारनु वै फूल॥

कठिन शब्दार्थ- **इही** = इसी। **आस** = आशा। **अटक्यौ** = अटका हुआ, ठहरा हुआ। **अलि** = भौंरा।**मूल** = जड़। **हवै है** = होंगे। **फेरि** = फिर से। **डान्नु** = डालियों पर। **वै** = वे ही।

संदर्भ तथा प्रसंग-प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित पाठ **बिहारी सतसई से कुछ पद** से लिया गया है। इसके रचयिता महाकवि बिहारी हैं। कवि ने अन्योक्ति के माध्यम से प्रतीक्षा और आशा के मोह जाल में फँसे मनुष्यों पर व्यंग्य किया है।

व्याख्या- कवि कहता है-ग्रीष्म ऋतु आने पर गुलाब के पौधे पर खिलने वाले सुंदर और

सुगंधित फूल अदृश्य हो गए। केवल बिना पत्तों वाली कँटीली डालिया रह गई हैं, किन्तु फिर भी भौंरा इस आशा में गुलाब की जड़े पर अटका पड़ा है कि फिर से वसंत ऋतु आने पर इन डालियों पर पहले जैसे ही सुंदर फूल खिलेंगे।

अन्योक्ति के अनुसार कवि ने उन व्यक्तियों पर व्यंग्य किया है, जो सुख-साधनों के छिन जाने या नष्ट हो जाने पर भी इसी आशा और प्रतीक्षा में फंसे रहते हैं कि अनुकूल समय फिर आएगा और उन्हें फिर उन्हीं सुख-साधनों को भोगने का अवसर मिलेगा।

विशेष-

(i) कवि बिहारी लाल की अन्योक्तियाँ बहुत लोकप्रिय रही हैं। प्रस्तुत दोहा उनके इसी काव्य-कौशल का एक नमूना है।

(ii) कवि ने '**आशा के दास**' लोगों की दयनीय दशा पर खेद भी व्यक्त किया है।

(iii) भाषा सरल किन्तु अर्थ-वैभव से परिपूर्ण है।

(iv) शैली प्रतीक्षाव्यर्थ और अन्योक्तिपरक है।

क्रमशः ..... (भाग-02)

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg